मुर्गियों को अपने घर के अन्दर ले आओ

भारत के एक गाँव की सुहानी-सी सुबह थी। सुमति, गाय का दूध दुहने के बाद हाथ में गर्म-गर्म चाय का प्याला लेकर अपनी चारपाई पर आकर बैठ गई। खेत पर थकान भरा एक लम्बा दिन सामने था, सो दिन की शुरुआत करने से पहले उसका मन हुआ कि वह एकान्त में कुछ समय बिताए। वह खिड़की से बाहर, गोशाला के आगे, दूर तक फैले गेहूँ के खेतों को निहार रही थी। गेहूँ की हरी-हरी डण्डियों के ऊपर धुँध उठ रही थी और सूरज, क्षितिज को अपनी भव्य उपस्थिति से कृतकृत्य करने के लिए ऊपर उठ ही रहा था। रागी के पौधों की सुर्ख़ लाल बालियाँ सूरज की रोशनी में जगमगा रही थीं। सुमति का पति घर के पीछे मुर्गियों की देखभाल में लगा था। सुमति को इस शान्तिपूर्ण क्षण के लिए अत्यन्त कृतज्ञता महसूस हो रही थी, उसका अपना समय जिसमें वह . . .

चर्ररर्रर! धम-धम-धम . . . कमरे का दरवाज़ा चर्र की आवाज़ करते हुए खुला और अलसाए क़दमों से कोई सुमति की ओर बढ़ा।

“राम, राम भौजी!” सुमति को ये शब्द सुनाई दिए। उसके पति की चचेरी बहन, सन्ध्या कमरे में आ रही थी। सन्ध्या खेती के कामकाज सीखने के लिए उनके साथ रहने आई थी। आई तो वह कुछ हफ़्तों के लिए थी, पर अब तो कई महीने बीत गए थे और ऐसा लग रहा था कि अब वहाँ से जल्दी जाने का उसका कोई इरादा नहीं है। इससे पहले कि सुमति कोई जवाब दे पाती, सन्ध्या ने आगे कहा, “चाय तो बहुत बढ़िया लग रही है—मैं भी आपके साथ एक प्याला ले लेती हूँ।” वह रसोई में गई और बर्तनों की खटर-पटर करते हुए एक प्याला ले आई।

जैसे ही सन्ध्या चारपाई पर आकर बैठी, सुमति अनमने ढंग से मुस्कराई और फिर से खिड़की से बाहर देखने लगी—यह साफ़-साफ़ पता लग रहा था कि वह एकान्त में रहना चाहती है।

परन्तु, सन्ध्या को तो मानो इससे कोई लेना-देना ही न था। बल्कि, वह तो उस सपने के बारे में बताने लगी जो उसने अभी-अभी देखा था। सुमति को अब यह याद भी नहीं रहा कि वह थोड़ी देर पहले इतना कृतज्ञ क्यों महसूस कर रही थी—कृतज्ञता की वह भावना तो अब एक धुँधली-सी याद बन गई थी। अब उसके मन में एक नई भावना थी : नाखुशी की।

चाय ख़त्म करते ही सुमति ने निर्णय लिया कि वह किसी की मदद माँगेगी। उसने गायत्री अम्मा के पास जाने का फैसला किया जो बड़ी समझ-बूझ वाली ज्ञानी स्त्री थीं और पास ही के एक घर में रहा करती थीं। सुमति अक्सर गायत्री अम्मा के पास खेती-बाड़ी के बारे में सलाह लेने जाया करती

थी, तथापि उनका ज्ञान तो खेती की जानकारी से कहीं अधिक था। असल में वे भगवान की भक्ति में मग्न रहतीं और गाँववाले अक्सर उनके पास, भगवान के विषय में उनके अनुभवों को सुनने आया करते थे।

सुमति गेहूँ के खेतों के बीच से लम्बे-लम्बे डग भरते हुए, गायत्री अम्मा के घर की ओर चल दी। उनके घर पहुँची तो देखा गायत्री अम्मा बरामदे में कच्चे, पर, साफ़-सुथरे फ़र्श पर बैठी हुई हैं। ऐसा लग रहा था जैसे वहाँ अभी-अभी झाड़ू लगाई गई हो।

गायत्री अम्मा ने उसकी तरफ़ देखा और कहा, "अरे वाह सुमति तुम! इतनी सुबह-सुबह! कहो कैसे आना हुआ?"

सुमति ने कहना शुरू किया, "अब मुझसे और बर्दाश्त नहीं होता। मैं अपने पति से प्रेम करती हूँ, मगर . . ." वह आगे बोलने से पहले थोड़ा रुकी, "उनकी चचेरी बहन! वह घर में कितनी जगह घेरे रहती है। लगता है जैसे वह हमेशा मेरे रास्ते में रोड़े अटकाती रहती है, हमेशा मुझे परेशान करती रहती है! मैं क्या करूँ?"

गायत्री अम्मा ने उसकी बात सुनी। उन्होंने अपनी भौहें सिकोड़ीं, उनकी आँखों में एक शरारतभरी चमक थी।

"तुम्हारे पास मुर्गियाँ हैं क्या?" उन्होंने सुमति से पूछा, जबकि उन्हें जवाब अच्छी तरह पता था।

"हाँ, बिलकुल हैं।"

"तुम्हारे पास जितनी भी मुर्गियाँ हैं, सबको अपने घर के अन्दर ले आओ।"

सुमति को यह थोड़ा अजीब लगा फिर भी उसे गायत्री अम्मा पर विश्वास था और सच कहें तो उसे पता भी नहीं था कि उनकी बात मानने के अलावा वह और क्या करे। उसने अपनी पड़ोसन को धन्यवाद दिया और सीधे मुर्गीघर की ओर चल दी जहाँ पर उसका पति एक टोकरी में अण्डे इकट्ठे कर रहा था।

सुमति ने अपने पति से कहा, "नरेश, मुझे सारी मुर्गियों को घर के अन्दर ले जाना है।"

नरेश ने सुमति की ओर देखा, उसे लगा कि वह मज़ाक कर रही है। पर इससे पहले कि वह समझ पाता कि उसकी पत्नी दरअसल मज़ाक नहीं कर रही, तब तक सुमति ने शोर मचाती मुर्गियों को वहाँ से बाहर निकालकर अपने घर के अन्दर ले जाना शुरू कर दिया।

अगली सुबह जब सुमति चाय लेकर अपनी चारपाई पर बैठी तो बहुत सारी मुर्गियाँ उसकी तरफ़ आने लगीं। उसे उनकी कर्कश-सी *क्वैक-क्वैक-क्वैक* सुनाई दी और इसके साथ ही वह दर्द के मारे चारपाई से उछल पड़ी क्योंकि मुर्गियाँ उसके पैर पर चोंच मार रही थीं।

उसके बाद उसे फिर से आवाज़ सुनाई दी, अपनी ननद की जानी-पहचानी *चर्रररर! धम-धम-धम।* पर इससे पहले की सन्ध्या सुमति को 'राम, राम' कह पाती, सुमति दरवाज़े के बाहर चली गई और तेज़ी-से गायत्री अम्मा के घर की ओर चल दी।

गायत्री अम्मा ने दरवाज़ा खोला। "राम, राम! समस्या हल हो गई?"

"नहीं, और भी बढ़ गई! जब मैं चाय पीने के लिए शान्ति से बैठी तो मुझे मुर्गियों की कर्कश आवाज़ों ने परेशान कर दिया, और वे मेरे पैरों पर चोंच भी मार रही थीं!"

गायत्री अम्मा ने मुस्कराते हुए कहा, "तुम्हारे पास बकरियाँ हैं?"

"हाँ।"

"तुम्हारे पास जितनी भी बकरियाँ हैं, उन्हें घर के अन्दर ले आओ।"

सुमति समझ नहीं पा रही थी कि इससे उसकी परिस्थिति को सुधारने में किस तरह मदद मिलेगी, फिर भी लग रहा था कि गायत्री अम्मा पूरी तरह से आश्वस्त हैं। सुमति बकरियों के चरने के मैदान में गई और सभी बकरियों को इकट्ठा कर अपने घर की बैठक में ले आई जहाँ मुर्गियाँ पहले से ही दरी पर चोंच मार रही थीं।

अगली सुबह, सुमति अपने बिस्तर से बाहर भी नहीं निकली थी कि *मैंऽऽ मैंऽऽ मैंऽऽ* की तेज़ आवाज़ ने उसे जगा दिया। वह बकरियों की आवाज़ थी! वे उसकी सलवार को काट रही थीं, सुमति उन्हें किनारे धकेलते हुए रसोई की ओर गई। जब वह चाय बना रही थी तो उसे मुर्गियों की कर्कश आवाज़ सुनाई दी, अपने पैर पर चोंच मारने का दर्द हुआ और फिर उसे *चर्रररर! धम-धम-धम* की आवाज़ आई।

उसे लगा कि अब वह फट पड़ेगी। वह दरवाज़े के बाहर दौड़ी और खेतों से होती हुई गायत्री अम्मा के घर पहुँची।

गायत्री अम्मा ने उसका स्वागत करते हुए फिर से पूछा, "समस्या हल हो गई?"

"नहीं! अब तो बात और भी बिगड़ती जा रही है। मेरे अपने ही घर में मेरे लिए कोई जगह नहीं है!"

“अच्छा! तुम्हारे पास कुछ कुत्ते हैं?”

सुमति ने अपना सिर पकड़ लिया; उसे पता था कि गायत्री अम्मा क्या कहने वाली हैं। उसने ‘हाँ’ में अपना सिर हिलाया।

“सारे कुत्तों को इकट्ठा करो और उन्हें अपने घर के अन्दर ले आओ।”

सुमति ने वैसा ही किया जैसा कि गायत्री अम्मा ने उससे कहा था हालाँकि अब उसे गायत्री अम्मा की समझ पर शक होने लगा था।

अगली सुबह और भी बदतर साबित हुई। उसके कानों में चोंच मारने का, कर्कश आवाज़ों का, *मैंऽऽ मैंऽऽ* का, भौंकने का और *चर्रररर! धम-धम-धम* का एक अजीब-सा शोर सुनाई दे रहा था। और इससे भी बदतर यह था कि सुमति अपने आप को चारों ओर से घिरा हुआ महसूस कर रही थी। घर में रह रहे इतने सारे जानवरों के बीच वह हिल भी मुश्किल से पा रही थी।

चोंच मारती हुई मुर्गियों, बेचैन बकरियों, भौंकते कुत्तों और अपनी हमेशा सिर पर सवार रहने वाली ननद के बीच से रास्ता बनाते हुए, सुमति एक बार फिर गायत्री अम्मा के घर गई।

इस बार जब गायत्री अम्मा ने दरवाज़ा खोला तो सुमति ने उनकी ओर मायूसी से देखते हुए कहा, “मैं तो यहाँ मदद माँगने आई थी, पर हाल सुधरने के बजाए और ख़राब हो गया है!”

गायत्री अम्मा शान्त रहीं और उन्होंने दृढ़ स्वर में कहा, “मेरी बात सुनो, सुमति। अब सारी मुर्गियों को, सारी बकरियों को, सारे कुत्तों को. . . अपने घर से बाहर कर दो और दरवाज़ा बन्द कर लो।”

सुमति ने हामी भरी और अपने घर वापस आ गई। उसने खेत की तरफ़ वाला, घर का दरवाज़ा खोल दिया। एक-एक करके सारे जानवर खुशी-खुशी खुली हवा में आ गए और अपने जाने-पहचाने बाड़े की ओर चले गए।

उसका पति और उसकी ननद चुपचाप चारपाई पर बैठकर चाय की चुस्कियाँ ले रहे थे और बिस्किट खा रहे थे—*कुर्रुम-कुर्रुम-कुर्रुम*। सुमति दरवाज़े के पास खड़ी, अपने परिवार और लगभग ख़ाली-से घर को देख रही थी। कितनी जगह थी, कितनी सारी जगह! कमरे में नाश्ता करने की धीमी-धीमी आवाज़ें होने के बावजूद शान्ति की एक शीतल लहर ने उसे भिगो दिया था।

गुनगुनाते हुए, आराम से खेतों में टहलते हुए सुमति एक बार फिर गायत्री अम्मा के घर गई। उसे अपने चेहरे पर मन्द हवा का गुदगुदाता स्पर्श और कन्धों पर सूरज की नर्म धूप महसूस हो रही थी।

गायत्री अम्मा ने दरवाज़ा खोला और कौतूहलभरी दृष्टि से उसे देखा।

सुमति मुस्कराई और कहा, “धन्यवाद! धन्यवाद! धन्यवाद! आपने मेरी सारी समस्याएँ हल कर दीं!”

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।